Shri Raghunatha Temple MSS. Library,
JAMMU

No. ५५०६ - च

Title शिवजी का बारहमासी

Author +

Extent ८

Subject काव्यांश

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

5507

नं० २५०६ — च

शिवजीकावार

- मासी (कविचन्द्रीग्राम) (कान्यांसे)

नं० १०१६

पत्राणि ८ (अष्ट)

1115

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ॐ श्री अथ शिवजी का भारामह लिख्यते ॥

ॐ वे व शिवजी वेल चढे उरगासिंघी

ङ्ग महवाजे ॥ जे ते मुने थ्यो रामिठन ।

पीहर ॥ मालवजां वनहारी गाजे

शिव देसजेहाथ त्रिसूलमोहिरा

सं० १०२६ —
शिवजी की
बारहमासी
— पनाली
कवि
(काश्मीर)

1

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

शि॰ वागोशविराजे॥ वलिमनस्याहरमं॰
२ डलशिवदेगुमगंगाजलभाषो॥२॥
वैश्णवगौराजापहेरेवमनरम्भृष
नथ्रगालगावे॥ ब्रमंडलदेनाव॰
नन्द्रकरैकोटिदेवताश्राथे॥ मोग

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सिंधूरभरीउनमारीसीसफूलरंग
लागे॥ वलमतनसाथरमंडलशिव
देगुमगंगाजलभागे॥ ५॥ जेदज्जग
तिकरिजैगणेशजीरिद्धसिधव
रदाता॥ पिताजकहीयाशिवशंक

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

शि. २ रपारवती ईमाता॥ आकासपताल
सभवसकालदे ज्योतिसदासिवः
लागे॥ चलमनस्याथरमंडलशि
वदेगग्रगंगजलभागे॥ १॥ झाडस
वारीशिवशंकरदेहंडमालगल

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पाहि॥ मङ्गलाग्रकथन्त्राघादाविजि
यावडेसेवाहि॥ इंद्रपरीदेकुकेदेव
ताबलपरीजसलागो॥ बलमन॰
स्याधरमंडलगमगांगाजलभाये॥ ४
सावणमेवाकरेगौरजाप्रभुजी

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

शि·
२

3

कुटीवनाई॥वनघंओनेविचउजाडी
मनअरामकछुपाई॥त्रैलोकीदा·
दाताबोलीमनसियाअवगानी
आगे॥चलमनस्याग्रमेउलखि
वैरगमनांगजलभागे॥५॥माझे

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वोलेषडगालीउताधधिवीचलंक
वनाई॥ हीरेमोतीलालजवाहरज
गमगामोतसवाई॥ विस्करमेन्रभ
ईश्रागिया। सरग्ररमृनजनला·
गो॥ चलमनप्णाश्रमेडलाधिवदे

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

त्रि·
५

गुमंगागाजलभाणे ॥ ५ ॥ ब्रह्मह्यास
कैसदाशिवजलाविचलेंकावै
जै ॥ धेउ धोरा मिष्टानपान पानद
दीणादीजै ॥ सगलदेवतावद्दुड
बीसोचानान्लागी ॥ चलमन·

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

स्याध्यरमंडलशिवदेगुसगंगाजल
भागे॥७॥केतेकातकमहेयोराजा
मनेभेगोनातीकेनी॥लानपस्या
मिउनहोएकदिनराटेककर
दीनी॥शिवबोलतेपारवतीउन

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

शि
५

फिरवनवासअराधे । चलमनसा
ध्रमंडलासिवदेशमगंगाजलभ
रे ॥ ८ ॥ मचरमेलीमेमनागादीज
टाममुकटसिरपेगा ॥ नेरेअंगावि·
भूतविराजेहरिमस्तकपासेद

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

चंदा॥ रणसिंघीकंठविराजेहस्तभ्र
नसभभागो॥ चलमनस्याशरमंडप
लशिवदेगुमंगांगजलभागो॥ ९
पोहहुमनमेकोयागुसाईपार
वतीवेश्रापे॥ नेनुवालाचिततनग्र

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

शि.
८

6

वैत्रोकिंमोहवधाये॥ अथैतत्कथा
ह्लणवोमेतत्सदाहारेगलागो
चलमनस्याघ्रमंडलसिवेदेग
गुसगंगाजलभागो॥ ५॥ मागायो
रजास्थ्यांनवोलेवोलानाथम

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नावै ॥ हुंउमालनमरेगलप्रभजी
तेरा श्रेननआवै ॥ श्रेषनकथासुना
वेमेन्त ॥ फेरसंगलेलागे ॥ चलम
नस्याघरमेंडलाशिवदेउमगंगा
जलभागे ॥ १ ॥ कगाणमोरजा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

शि॰
७

वनमैवैठीकरनकथाशिवला॰
गे॥उपरकाटिविरूछाकाकर
नेछरतचितवरूभागे॥सुनक
थाउठचलिछातेनामगारसहा
शिवलागे॥चलमनस्यामसरमेउ॰

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

लसिवदेगभगंगाजलभावे ॥ १९॥

इतिश्रीशिवजीकावारामह्रासंपूर्ण

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

१६१

४

५५
१०२६

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri